(1)

November 2016

312-054

Monday 07

15/7/20

B.A + B.Sc.
हिन्दी रचना
भाग I
कविता कानन

डॉ० अरविन्द कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न – रसखान के काव्य की विशेषताओं का उल्लेख करें। या
अथवा
रसखान की कृष्ण आराधना या प्रेम वर्णन पर प्रकाश डालें। अथवा
रसखान का कवि परिचय प्रस्तुत करें।

उत्तर: – माथे पर मोर का पंखा, कमर में पीताम्बर, हाथ में लकुटी तथा अधरों पर मुरली धारण करने वाले रसखान उन आराधक कवियों में हैं जो मात्रा में कम लिखकर भी कृष्ण भक्ति में अपनी चित्ताकर्षक अनुभूतियों तथा निश्छल आस्था के कारण अमर प्रतिनिधि कवि हो गये। कृष्ण भक्ति के आलोक में उनकी कृतियाँ एवं उनके विचारों के रसखान को गाद की आत्मा सारा पर न्योछावर करने वाला दूसरा व्यक्ति आज तक पैदा नहीं हुआ। रसखान का जन्म सन् 1558 ई० तथा निधन 1618 ई० में ज्यादातर लोग मानते हैं जो सोचे जाने का सही आधार हुआ है। ये पठान वंश के थे तथा इनका सम्बन्ध शाही खानदान से था। ये दिल्ली के रहने वाले थे पर कृष्ण प्रेम के आलोक में इन्होंने अपना निवास स्थान ब्रजभूमि को बनाया। एक जनश्रुति के मुताबिक –

क्रमशः –

बी.ए. पार्ट-II
Part I हिन्दी व्याख्या
रसखान 15/7/20

उनका प्रेम एक अत्यन्त अभिमान और कृष्णानुरागिनी नारियों का, इनकी आराध्य पात्र है कृष्ण-भक्ति की ओर उन्मुख हुए और वृंदावन आकर कृष्ण भक्ति में रम गये। इनके गुरु का नाम गोसाईं विट्ठलनाथ था। इन्होंने प्रेम वाटिका और सुजान रसखान नामक दो पुस्तकों की रचना की। [illegible] होते हुए भी गोसाईं विट्ठलनाथ से दीक्षा लेकर कृष्ण भक्ति द्वारा के आलोक को [illegible] जी के प्रेम को रंग दिया है।

रसखान कृष्ण भक्त कवि हैं। इनके कृष्ण आराध्य व्यक्ति हैं। कृष्ण के [illegible] रूप से कृष्ण परिचित आराध्य हैं जिसमें वेदों और पुराणों ने अनंत और अनादि कहकर पुकारा है। पर कृष्ण के इस रूप पर रसखान नहीं रीझ सके जिनका पार ब्रह्मा, गणेश नहीं पा सके हैं। रसखान को गोपियों के संग लीला करने वाले कृष्ण प्रिय हैं। रसखान उस कृष्ण पर मरते हैं जिनके नाक पर मोर पंख, हाथ में लकुटी और कमर में पीताम्बर है—

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं
गुंज की माल गरे पहिरौंगी।
ओढ़ि पीताम्बर लै लकुटी
बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥

रसखान का प्रवेश

आपके आराध्य के मंदिर के बाहरी आंगन तक ही सीमित नहीं है बल्कि उनका प्रवेश अन्तःपुर तक भी है, जिसका परमात्मा का

क्रमशः —

B.A + B.Sc Part I Hindi रसखान

रसखान 15/7/20

चार वेद और पुराणों नहीं पा करके उस परमात्मा को रसखान ने राधा के कुंज में पाया —

हेरत-हेरत हारि परयो,
रसखान बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुरो वह कुंज कुटीर में
बैठो पलोटत राधिका पायन।

रसखान सगुण भक्त धारा के भक्त हैं तथा उनकी भक्ति सख्य भाव के उपासक की सी है। रसखान की भक्ति सात्विक तन्मयता से परिपूर्ण है जिसमें भक्त स्वतः प्राप्त आत्मीयता प्राप्त कर लेता है। इस आत्मीयता की प्राप्ति ही रसखान की भक्ति का लक्ष्य है। कृष्ण के प्रति रसखान का प्रेम इतना गहरा है कि वे जन्म-जन्मान्तर तक कृष्ण का सानिध्य प्राप्त करना चाहते हैं। अपने आराध्य की भूमि में स्थान पाने के लिये यदि उनको जन्म में उन्हें पशु, पक्षी, या जड़ पत्थर में भी जन्म लेना पड़े तो रसखान को प्रसन्नता होगी पर पल भर के लिये भी वे अपने आराध्य से अलग नहीं होना चाहते —

मानुष हौं तो वही रसखान
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बसु मेरो
चरौं नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को
जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन।

क्रमशः —